काव्यालोक

द्वितीय उद्योत

(अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना और ध्वनि)

रचयिता
विद्यावाचस्पति पण्डित रामदहिन मिश्र

'अध्ययन का व्रत लेकर भी जिसने अर्थ को न जाना, या जानने का सचाई के साथ कभी प्रयत्न नहीं किया या प्रयत्न करता हुआ भी अपने संकल्प को विजयी नहीं बना सका, उस अधीती के लिए शोक है।'

प्रकाशक
ग्रन्थमाला-कार्यालय
बाँकीपुर